वीरपुर (जिला बेगुसराय) से प्राप्त कतिपय पालकालीन मूर्तियाँ

*ठाकुर हरेन्द्र दयाल**

मिथिला क्षेत्र की परिधि उत्तर में हिमालय, दक्षिण में गंगा नदी, पूर्व में कोशी तथा पश्चिम में गण्डक है। इस क्षेत्र के अन्तर्गत दरभंगा, मधुवनी, समस्तीपुर, बेगूसराय, खगड़िया, सहरसा, मधेपुरा, पूर्णियाँ जिले आते हैं। निःसंदेह बेगूसराय जिला इस क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। बेगूसराय जिला के विभिन्न भागों, जैसे बरौनी, राजवारा, संघौल, बेगूसराय, कंकौल, राजौरा, जयमंगलागढ़, नौलागढ़, वीरपुर एवं वलिया से पालकालीन प्रस्तर मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। यहाँ पर केवल वीरपुर से प्राप्त पालकालीन मूर्तियों का विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

बेगूसराय मुख्यालय से 10 कि॰ मी॰ की दूरी पर वीरपुर ग्राम स्थित है। इसे वीरपुर संघाराम भी कहा गया है। यह स्थान बेगूसराय से पक्की सड़क से जुड़ा है। वैसे तो इस ग्राम में अनेक प्रतिमाएँ हैं, परन्तु यहाँ मात्र काले पत्थर की प्रतिमाओं का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। ऐसे काले पत्थर की प्रतिमाएँ पाल युग में निर्मित की जाती थीं। बेगूसराय क्षेत्र पर पालों का आधिपत्य था।[1] आठवीं सदी के पूर्वार्द्ध में अराजकता से तंग आकर जनता और नेताओं ने बंगाल के गोपाल नामक व्यक्ति को राजा चुना, जिसने पाल राजवंश की स्थापना की। गोपाल द्वारा बिहार प्रदेश पर विजय प्राप्त कर लेने पर उसके पुत्र धर्मपाल ने सम्भवतः पाटलिपुत्र को फिर से बसाया और अपनी राजधानी बनायी। देवपाल ने मुद्‌गगिरि या मुंगेर में अपनी राजधानी रखी। मगध की ऐतिहासिक गरिमा से प्रभावित होकर ही बंगाली पालवंशियों ने इसे अपना केन्द्र बनाया और यहीं से पाल साम्रज्यवादी नीति तथा पाल कला और संस्कृति की किरणें उत्तर-भारत में चमकीं। पाल साम्राज्य धर्मपाल और देवपाल के समय में पूर्व में आसाम और पश्चिम में कन्नौज तक फैल चुका था। पर पाल राजाओं को बराबर त्रिपक्षीय संघर्ष में उलझा रहना पड़ा। भारतीय सार्वभौम सत्ता के प्राप्ति हेतु राष्ट्रकूटों, गुर्जर-प्रतिहारों और पालों में कई पीढ़ियों तक संघर्ष होते रहे। कुछ समय के लिए तो गुर्जर-प्रतिहारों ने बिहार और उत्तर-बंगाल पर भी आक्रमण किया। पाल-युग में राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद पाल राजाओं के तीन सौ वर्ष तक के शासन

में बिहार-बंगाल में कला का महत्वपूर्ण विकास होता रहा। राजनीतिक उतार-चढ़ाव के बावजूद इस युग में धर्म और कला के विकास में लोग संलग्न रहे। बेगूसराय जिले पर भी शासन था। यही कारण है कि यहाँ से अनेक पालकालीन प्रतिमाएँ उपलब्ध हुई हैं।[2]

वीरपुर से प्राप्त अधिकांश प्रतिमाएँ काले पत्थर की हैं। राजमहल और मुंगेर के खड़गपुर पहाड़ी में ऐसे काले पत्थर बहुतायतता में मिलता है। मुंगेर जिले में सीता कोहवर में प्राचीन स्लेट पत्थर निकालने की खान का पता चला है, जिससे बहुत बड़े पैमाने पर (शायद पालयुग में ही) पत्थर निकाला गया था।[3]

वीरपुर ग्राम से प्राप्त निम्नलिखित प्रतिमाएँ हैं -

सूर्य प्रतिमा (भगवान स्थान)

वीरपुर ग्राम के हरिहरटोला में भगवान स्थान पर काले पत्थर की सूर्य प्रतिमा है। यह खड़ी प्रतिमा है। इसकी लम्बाई नीचे से ऊपर (प्रभामंडल तक) 4'11½ है। बीच में सूर्य की प्रतिमा है। इसका स्टेला (प्रभावली) अधिक अलंकृत नहीं है और इसके ऊपर का भाग नुकीला है। इसका स्टेला प्रतिमा के समस्त शरीर से जुड़ा दिखाया गया है। प्रभावली से मूर्ति को पीठ की तरफ से जोड़ दी गयी है। इस कारण दर्शक की नजर मूर्ति की पीठ पर आसानी से नहीं पड़ती है। लगता है कलाकार ने मूर्ति की पीठ गढ़ने में उतनी तत्परता और लगन नहीं दिखाई, जितनी कि तृतीय आयाम की मूर्ति बनाने में चाहिए थी। इस कारण सामने और बगल से मूर्ति पूरी और चौकोर कटी मालूम पड़ती है। ऐसे प्रभावली पालकालीन अन्य प्रतिमाओं[4] में दृष्टिगत होते हैं। विचाराधीन प्रतिमा के प्रभावली के ऊपरी भाग पर विद्याधर माला धारण किये हुए उड़ते दिखाये गये हैं।

यह बहुत ही आकर्षक मूर्ति है। यह विभिन्न आभूषणों से आभूषित है। इसके मस्तक पर लम्बा मुकुट, गले में हार, कमर में कमरधनी और हाथों में आभूषण दिखाए गये हैं। पाल कालीन प्रतिमाओं में आभूषण दिखाने के प्रमाण मिलते हैं। इस युग के कलाकारों ने बड़े चाव से प्रतिमाओं पर आभूषणों के अंकन किये हैं।[5]

सूर्य-प्रतिमा का गोलाकार चेहरा, कोमल और चिकने अंग और वक्ष: स्थल चौड़ा दिखाया गया है। इसमें नारी-सुलभ कोमलता झलकती है। इस युग में हिन्दू धर्म तथा बौद्ध धर्म पर तंत्रयान का प्रभाव था जिसमें शक्ति की प्रधानता थी। इस कारण बराबर ध्यान इस बात का रखा गया कि सभी मूर्तियाँ अत्यन्त आकर्षक और श्रृंगार-रस से पूर्ण हों। यही कारण है कि पालकालीन कला में पुरुष-मूर्तियों में भी नारी सुलभ कोमलता का अंकन किया गया था।

सूर्य-प्रतिमा का गोल चेहरा, लम्बे कान, नुकीला नाक तथा दोनों भौहों के बीच में टीका दर्शनीय है। इस प्रतिमा के दोनों भौहों के बीच में टीका दर्शनीय है। इस प्रतिमा के दोनों पैरों में लम्बे जूते दिखाये गये हैं। यह उल्लेखनीय है कि प्रतिमाओं में उनके पैरों की अंगुलियों को दिखाने की परम्परा नहीं थी। उनके दो पैर या तो रथ में छीपे हैं या लम्बे जूते पहने प्रदर्शित किए गये हैं। उत्तर भारत की अधिकांश सूर्य मूर्तियों के पैर में घुटनों तक फीतेदार बूट हैं और कमर में अव्यङ्ग्य पड़े हैं। यही वाराहमिहिर द्वारा उल्लिखित 'उदीच्यवेश' है। **भविष्य पुराण** से ज्ञात होता है कि शक स्थान में विश्वकर्म्मा ने सूर्य की मूर्ति बनाई। सारा विश्व सूर्य के तेज को सहन करने में असमर्थ हो गया। अत: सूर्य के कहने पर विश्वकर्म्मा ने उनके शरीर के तीक्ष्ण तेज को कम करने के लिए खगद पर चढ़ाया, पर घुटने के नीचे का भाग छूट गया। उस भाग के तेज को मनुष्य की आँखें सहन नहीं कर सकती थीं, अत: लम्बा बूट पहनना पड़ा।[6] इस प्रकार सूर्य-मूर्ति की पूजा शक-स्थान से भारत आई, और संभवत: सर्वप्रथम यहाँ मेशी पुरोहितों ने ही इसकी पूजा-अर्चना आरम्भ की होगी। इसके संबंध में कुछ ठीक से नहीं कहा जा सकता है। यह भी कहा जाता है कि सूर्य उपासक ईरान से भारत आये। वे ही शाकदीपीय ब्राह्मण कहलाए।

भविष्य पुराण में भी इसी बात का उल्लेख है कि शक-स्थान से मेशी पुरोहित भारत बुलाये गये और उन्होंने सूर्य की पूजा के द्वारा कृष्ण के पुत्र 'साम्ब' को श्वेत कुष्ट से मुक्त किया।

यह प्रतिमा सात अश्वों से युक्त रथ पर सवार प्रदर्शित की गई है। घोड़ों की उठती टापों और मुद्रा से अतिशय गति, स्फूर्ति और शक्ति की अभिव्यक्ति होती है। घोड़ों के लगाम थामे अरुण को दिखाया गया है। यह पैर से हीन है इसलिए इसके पैरों का अंकन नहीं किया गया है। सूर्य-प्रतिमा की दाहिनी ओर पिंगल की आकृति है जिसकी लम्वाई 1'3'' है। इसके एक हाथ में लेखनी तथा दूसरे में स्याही का पात्र है। यह आकृति भी आभूषणों से युक्त है जिसके चेहरे पर दाढ़ी प्रदर्शित की गई है। इसके बगल में सूर्य की पत्नी छाया का अंकन है, जिसकी लम्बाई एक फुट है। यह भी आभूषणों से आभूषित है और इसके एक हाथ में चँवर है। वहीं पर दूसरी ओर, हाथों में धनुष लिए उषा का अंकन है।

सूर्य के दोनों पैरों के पास महाश्वेता और बाईं ओर दंडी का अंकन है। यह आकृति 1'3½" लम्बी है। इसके बाएँ हाथ में दण्ड है और दाहिनी हाथ अभय मुद्रा में है। इसके पास ही संज्ञा देवी का भी अंकन है। इन सभी तथ्यों से यह प्रतीत होता है कि यह प्रतिमा उदीच्यवेश में है।

सूर्य प्रतिमा (बसहा स्थान)

वीरपुर के एक भाग में मईया-धीया पोखर के किनारे बसहास्थान में एक खपड़ैल मकान में

सूर्य के काले पत्थर की प्रतिमा स्थापित है। इस प्रतिमा की प्राप्ति इसी पोखर से की गई थी। इस प्रतिमा की प्रभावली ऊपर से नुकीली है। इस प्रतिमा की कुल लम्बांई 3'6" तथा चौड़ाई 2' फीट है। इसकी प्रभावली काफी अलंकृत है। इसके ऊपरी भाग में कीर्तिमुख का अंकन है। सिंह के मुख से पुष्प माला निकलती प्रदर्शित की गई है। दोनों ओर एक-एक विद्याधर अपने हाथों में माला धारण कर उड़ते दिखाये गये हैं। प्रभावली पर मकर और घोड़े की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं। इन सभी के अंकन प्रभामंडल को सुसज्जित करने के लिए किये गये हैं।

सूर्य का गोल चेहरा तथा बिलासमय मुस्कान दर्शनीय है। इसके मस्तक पर मुकुट, ललाट पर टीका, गले में हार, वनमाला और कमर में कमरधानी का अंकन है। यह सूर्य-प्रतिमा दो भुजाओं वाली है। इसके दाहिने तथा बाएँ हाथों में एक-एक लम्बे नामवाले कमलपुष्प हैं। इसके कमर में लटकते कटार और पैरों में लम्बे जूते हैं। सूर्य -प्रतिमा के पैरों के पास विभिन्न आभूषणों से युक्त महाश्वेता है। सूर्य कमलपुष्प पर खड़े है। वहीं पर उनका सारथी अरुण बैठा है तथा कमल के नीचे सात घोड़ों की आकृतियाँ अंकित हैं। इनमें तीन दाहिनी ओर और तीन बायीं ओर और एक घोड़ा बीच में बने वृत्त से निकलता हुआ दिखाया गया है। इस प्रतिमा की दाहिनी ओर मस्तक पर मुकुट, गले में हार पहने, दाढ़ीयुक्त पिंगल की आकृति है। इनके हाथों में लेखनी तथा दावात का अंकन है। पिंगल की बाई ओर विभिन्न आभूषणों से आभूषित एक नारी-प्रतिमा है जो अपने दाहिने हाथ में चंवर धारण की हुई है। पिंगल के पास दाहिनी ओर मुख किये दौड़ती हुई उषा की आकृति है, जिसके हाथों में धनुष-वाण है। मुख्य प्रतिमा की बाई ओर एक देवी का अंकन है जो संज्ञा हो सकती है। इसी देवी की ओर एक पुरुष की आकृति है जो दंडी है। इसके हाथों में दण्ड है। इसके पास ही प्रत्युषा धनुष धारण किये प्रदर्शित की गई है।

विष्णु प्रतिमा (बसहा स्थान)

वीरपुर के बसहा स्थान में ही एक विष्णु प्रतिमा स्थापित है। यह सूर्य प्रतिमा के बगल में ही है। कहा जाता है कि इसके निकट वाले पोखर से ही प्रतिमा की प्राप्ति हुई थी। इसकी प्राप्ति का सही समय ज्ञात नहीं है। यह प्रतिमा भी काले पत्थर की है और नीचे से ऊपर तक स्टेला 3' लम्बी तथा 16" चौड़ी है। लेकिन बीच में अंकित विष्णु प्रतिमा 23" लम्बी है। यह स्थानक चतुर्भुजी प्रतिमा है। इसके पीछे के दाहिने हाथ में गदा, सामने का दाहिना हाथ अभयमुद्रा में, पीछे के बाएँ हाथ में चक्र तथा सामने के बाएँ हाथ में शंख है। इस प्रतिमा के मस्तक पर मुकुट, ललाट पर टीका, गले में हार, कमर में कमरघनी तथा पैरों में पाजेब हैं। प्रतिमा के कमर के नीचे रेखाओं से युक्त धोती है, लेकिन कमर के ऊपर के भाग में कोई परिधान नहीं है।

बसहा (बसहा स्थान)

बसहा स्थान से ही बसहा की प्रतिमा प्राप्त हुई है जिसे सूर्य तथा विष्णु की प्रतिमाओं के पास ही स्थापित किया गया है। शिव के वाहन वृषभ की यह आकृति काले पत्थर की है। इसकी कुल लम्बाई 3'6'' तथा चौड़ाई 2' है। यह उकड़ू बैठे वृषभ की प्रतिमा है। इसकी दो सींगें अच्छी तरह से प्रदर्शित किये गये हैं तथा गले में लटकती घंटी भी भली प्रकार दिखायी गयी है। यह प्रतिमा अनेक आभूषणों से अलंकृत है। इसके कूबड़ को अच्छी तरह दिखाई गयी है।

महिषासुरमर्दिनी (काली स्थान)

वीरपुर के काली स्थान से महिषासुरमर्दिनी की प्रतिमा प्राप्त हुई है। इसे एक वृक्ष के नीचे स्थापित किया गया है। यह भी काले पत्थर की प्रतिमा है। यह प्रतिमा उलटे कमल पुष्प पर प्रदर्शित की गई है। यह खंडित बहुभुजी प्रतिमा है। भैंसे के रूप में महिषासुर की आकृति भी अंकित है। इसका मस्तक धड़ से अलग दिखाया गया है।

अवलोकितेश्वर (भैरव स्थान)

वीरपुर के भैरव स्थान के मंदिर में यह काले पत्थर की प्रतिमा स्थापित है। इसकी प्रभावली अलंकृत और स्टेला नुकीली है। इसके प्रभामंडल पर विभिन्न मुद्राओं में पंचध्यानी बुद्धों, तथा प्रतिमा की दाहिनी ओर एक स्तूप का अंकन है। मुख्य प्रतिमा दोहरे प्रस्फुटित कमल पुष्प पर बैठी प्रदर्शित की गई है। इसका दाहिना पैर लटका रहा है और बायाँ पैर कमलासन पर स्थित है। अवलोकितेश्वर के मस्तक पर मुकुट, कान में कर्णफूल, गले में हार, हाथ में भुजबंध और कंगन और कमर में कमरघनी है। इसका दाहिना हाथ वरद मुद्रा में तथा बायाँ हाथ कमल पुष्प से युक्त है। इस प्रतिमा की दाहिनी ओर एक बैठे हुए भक्त की आकृति का भी अंकन है।

चामुण्डा (भैरव स्थान)

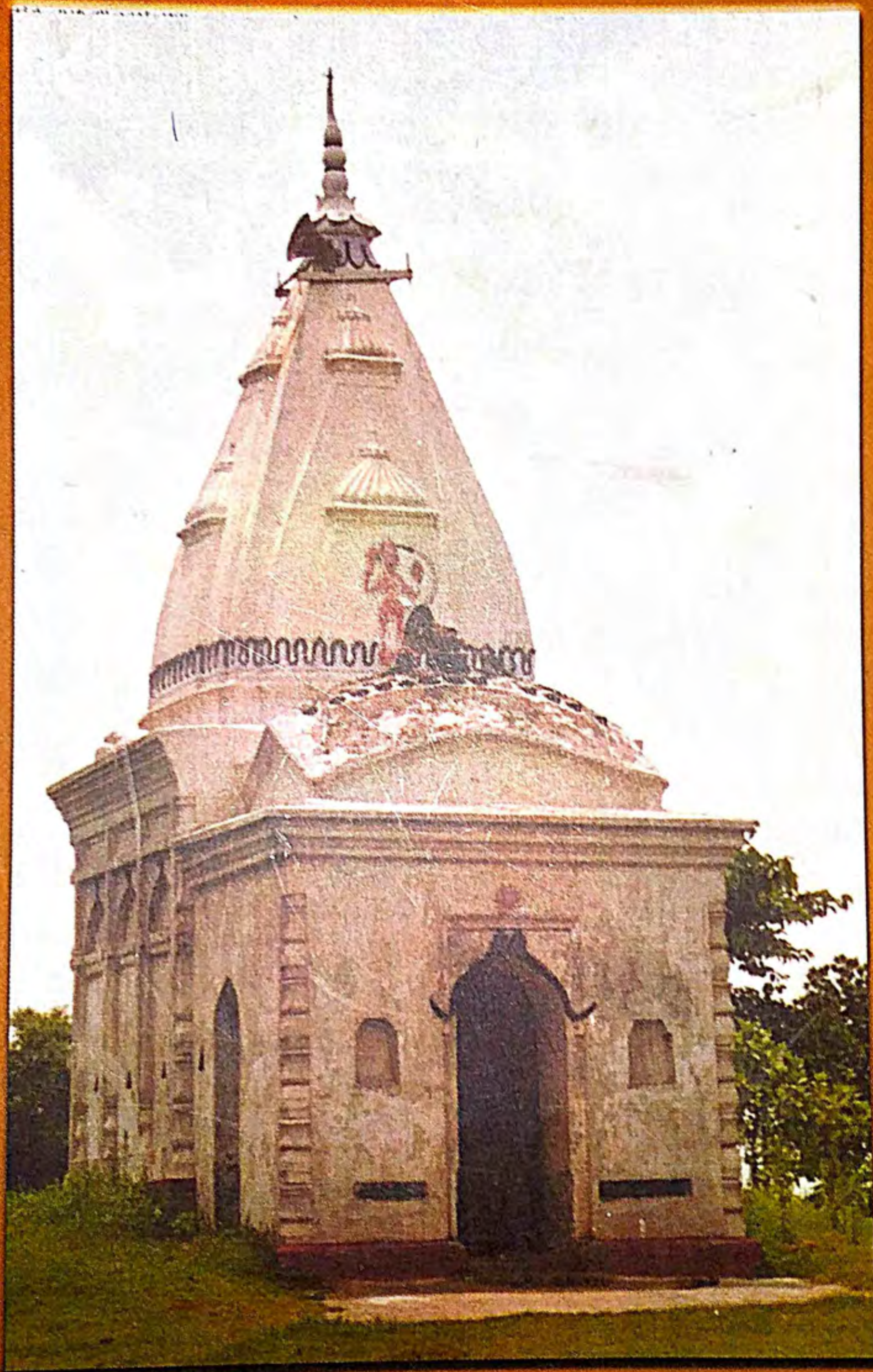
इस स्थान के पास एक वृक्ष के नीचे काले पत्थर की चामुण्डा की प्रतिमा है। इसका मस्तक खंडित है। यह अष्टभुजी प्रतिमा है, जिसके चार दाहिने हाथ खंडित हैं, लेकिन चार बायें हाथों में तीन विद्यमान हैं और एक खंडित है। इसके सामने वाले बायें हाथ की अंगुलियाँ विस्मय मुद्रा में, दूसरे हाथ में खट्वांग तथा तीसरे हाथ में एक खंडित मस्तक का लम्बा केश है। यह प्रतिमा विभिन्न आभूषणों से आभूषित है। इसकी वक्षस्थल की पसलियाँ दिखाई पड़ रही हैं और पेट धँसा है। इसके वक्षस्थल पर एक वृश्चिक का अंकन है। यह देवी मुण्डमाल पहनी है। **मार्कण्डेय पुराण**[7] से ज्ञात होता है कि चण्ड और मुण्ड राक्षसों की हत्या करने से इन्हें चामुण्डा कहा गया है। वीरपुर के बगल के एक गाँव से चामुण्डा की तथा बरैपुर से रेवन्त की मूर्ति भी पाई गई हैं। वीरपुर से पालकालीन काले पत्थर की अनेक प्रतिमाएँ मिली हैं। इससे इस स्थान पर पालों के आधिपत्य की पुष्टि होती है। दूसरी बात यह

है कि यहाँ से सूर्य, विष्णु, बसहा, महिषासुरमर्दिनी, अर्धा, चामुण्डा, अवलोकितेश्वर की प्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं। अतः ये प्रतीत होता है कि यहाँ पाल काल में विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के अनुयायी मिल-जुल कर रहते थे। हिन्दू तथा बौद्ध प्रतिमाओं की प्राप्तियाँ यह संकेत करती हैं कि इन दोनों सम्प्रदायों के बीच मनमुटाव नहीं था। इस क्षेत्र में बौद्ध प्रतिमाओं की प्राप्ति एक महत्पूर्ण बात है। बेगूसराय जिले के राजवारा से मारीचि और बलिया से बुद्ध प्रतिमाएँ मिली थीं। संघौल के उत्खनन से तो अनेक पूजक स्तूप के अवशेष भी मिले हैं। इन प्राप्तियों से बेगूसराय जिले में पाल युग के दौरान बौद्ध धर्म के अस्तित्व का पता चलता है। लेकिन वीरपुर में हिन्दू तथा बौद्ध सम्प्रदायों की प्रतिमाओं की प्राप्ति बहुत महत्वपूर्ण है। यहाँ इस ओर संकेत करना आवश्यक है कि इस युग में कलाकारों ने प्रतिमा लक्षणों के आधार पर मूर्तियों का निर्माण किया। उन्हें कल्पना के आकाश में उड़ने की स्वतंत्रता नहीं थी, बल्कि वे प्रतिमाशास्त्र के नियमों से बंधे थे। जो भी प्रतिमाएँ इस युग में बनाई गई उनमें नारी सुलभ कोमलता का प्रदर्शन किया गया। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि कलाकारों ने प्रतिमाओं के शरीर पर अनेक प्रकार के आभूषणों को चित्रित करने का प्रयास किया है। कलाकारों में आभूषणों के प्रति इतना आग्रह था कि विरागी बुद्ध और बौद्ध प्रतिमाओं पर भी आभूषण प्रचूरता से दिखाये गये हैं।

संदर्भ

1. बी॰ पी॰ सिन्हा, **भारतीय कला को बिहार की देन**, पटना, 1958, पृ॰ 126.
2. राधा कृष्ण चौधरी, **दी जायसवाल आर्कियोलोजिकल ऐण्ड हिस्टोरिकल सोसाइटी बुलेटिन**, संख्या ।, पृ॰ 11.
3. आर्क्योलाजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया, **ऐनुअल रिर्पोट**, 1925-26, पृ॰ 152-153.
4. तुलनीय, बी॰ पी॰ सिन्हा, पूर्वोक्त, चित्र संख्या 89, 90, 91, 92, 93, 96, 95.
5. वही।
6. **वृहत्संहिता**, 59.
7. **मार्कण्डेय पुराण**, अध्याय 87, 25.

Art and Archaeology of Mithila



Directorate of Archaeology

Dept. of Art, Culture and Youth, Bihar, Patna

Art and Archaeology of Mithila

Chief Editor
S.K. Sinha
Director, Archaeology, Bihar

Editors
Dr. Atul Kumar Verma
Dr. Kumar Anand
Dr. S.K. Jha

Directorate of Archaeology
Dept. of Art, Culture & Youth, Bihar
2006

Contents

Archaeology Section

Art Section